■ ■ ■

मोपला नरसंहार का दोष

डॉ. जाहिदुल दीवान
पोस्ट डॉक्टरल फेलो
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद
नई दिल्ली

20 अगस्त 1921 का दिन केरल के इतिहास में काले दिन के तौर पर दर्ज है। इसी दिन केरल के मालाबार इलाके में मोपला विद्रोह की शुरुआत हुई थी । भारत में अरब के मुसलमान व्यापारी केरल के मालाबार तट के रास्ते से आया था। मालाबार क्षेत्र की चेरामन जुमा मस्जिद, भारत में इस्लाम के प्रवेश के प्रतीक के रूप में आज भी मौजूद है। अंग्रेजों के खिलाफ शुरू हुआ मोपला विद्रोह ने बाद में सांप्रदायिक रंग ले लिया था। उस वक्त जो हिंदू लोग जाति और वर्ण व्यवस्था से पीड़ित थे उन्होंने इस्लाम अंगीकार कर लिया था। ऐसा कहा जाता है कि विद्रोह के दौरान मालाबार इलाके में अनेक लोगों की हत्या हुई थी। दंगे के दौरान महिलाओं के साथ बलात्कार भी होने का प्रमाण मिलता है। अनेक राष्ट्र प्रेमिओं का यह दावा है कि उस दौरान अनेक निम्न जाति के हिंदुओं ने अपना धर्म बदलकर मुसलमान बन गया था। इसीलिए केरल में मोपला विद्रोह की चर्चा आज तक होती है। खासकर राष्ट्रवादी विचारधारा के लोग इस विद्रोह को लेकर केरल के वामपंथियों और कांग्रेसियों की कड़ी आलोचना करते हैं।

वास्तव में केरल के मालाबार इलाके में हुआ मोपला विद्रोह खिलाफत आंदोलन के साथ भड़का था। प्रथम विश्वयुद्ध में पश्चिमी एशियाई देश तुर्की की हार के बाद, अंग्रेजों ने वहां के खलीफा को गद्दी से हटा दिया था। अंग्रेजों की इस कार्रवाई से दुनियाभर के मुसलमानों का नाराज होना स्वाभाविक था। तुर्की के सुल्तान को गद्दी वापस दिलाने के लिए ही मुसलमानों ने खिलाफत आंदोलन की शुरुआत की थी। भारत के मुस्लिम नेताओं ने इस मामले को लेकर अंग्रेजों के विरुद्ध सन् 1921 में खिलाफत आन्दोलन शुरू किया । भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल मुस्लिम बड़े नेताओं जैसे-अबुल कलाम आजाद, जफर अली खां और मोहम्मद अली जैसों ने खिलाफत आंदोलन का समर्थन किया। इस आंदोलन नेकिसी प्रकार गांधी जी का भी समर्थन प्राप्त किया था। महात्मा गांधी इस आंदोलन के जरिए अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई में हिंदू और मुसलमानों को

एकसाथ लाने की कोशिश कर रहे थे। मुस्लिम नेताओं तथा भारतीय मुसलमानों को साथ लाने के लिए गाँधी जी ने मोतीलाल नेहरु के सुझाव पर, कांग्रेस की ओर से खिलाफत आन्दोलन को समर्थन देने की घोषणा की। श्री विपिन चन्द्र पाल, डॉ. एनी बेसेंट, सी. ऍफ़ अन्द्रूज आदि नेताओं ने कांग्रेस की बैठक में इस समर्थन का विरोध किया। किन्तु इस मुद्दे पर हुए मतदान में गाँधी जी ही जीते। इस प्रकार गाँधी जी खिलाफत आन्दोलन के भी नेता बन गए। अब मुसलमानों ने कांग्रेस के सहयोगसे जगह-जगह पर प्रदर्शन करना शुरू किया। 'अल्लाह हो अकबर' जैसे नारे ने लगातार मुस्लिमों का उत्साहवर्धन किया। तब महामना मदनमोहन मालवीय जैसे कुछ नेताओं ने यह चेतावनी दी थी कि खिलाफत आन्दोलन की आड़ में मुस्लिम भावनाएं भड़काकर भविष्य के लिए खतरा पैदा किया जा रहा है। किन्तु इस पर गांधीजी का कहना था कि मैं मुसलमान भाईओं के इस आन्दोलन को स्वराज से भी ज्यादा महत्व देता हूँ। भले ही खिलाफत आन्दोलन के बावजूद अंग्रेजी हुकूमत विशेष प्रभावित नहीं हुए थे, फिर भीइस आंदोलन से मुस्लिम एककीकरण को बहुत बल मिला था।

खिलाफत आन्दोलन की असफलता से भारत के मुसलमानों मेंकाफी असंतोष फैल गया था। यह असंतोष किसके प्रति था स्पष्टतः कहना मुश्किल है। दंगे के दौरान केरल के मालावार क्षेत्र मेंबहुसंख्यक मुस्लिम मोपलाओं ने वहां के अल्पसंख्यक हिन्दुओं परअत्याचार शुरू किया था, इसीलिए वहां से कुछ बर्बरता के उदाहरण भी मिल जाते हैं। हिन्दू महासभा के नेता स्वातंत्र वीर सावरकर ने आगे चलकर मालावार क्षेत्र की कल्पना कर वहां के अत्याचारों व हत्याकांड की पृष्ठभूमि पर 'मोपला' नामक एक उपन्यास भी लिखा है। इस संदर्भ में कुछ विचारकों का मानना है कि खिलाफत आन्दोलन का समर्थन कर गाँधी जी तथा कांग्रेस ने मुस्लिम कट्टरवाद तथा अलगावबाद को बढ़ावा दिया था। उन चिंतकों का यह भी कहना है कि मोपलाओं द्वारा हिन्दुओं की हत्या का जब आर्य समाज तथा हिन्दू महासभा ने विरोध किया तब भी गाँधी जी ने मोपलाओं का ही साथ दिया। महान स्वाधीनता सेनानी तथा हिन्दू महासभा के नेता भाई परमानन्द जी ने उस समय चेतावनी देते हुए कहा था-गाँधी जी तथा कांग्रेस ने मुसलमानों को तुष्ट करने के लिए जिस हदतक खिलाफत आन्दोलन का समर्थन किया तथा अब वे बहुसंख्यक मोपलों की प्रसंसा कर रहे हैं, यह घातक नीति आगे चलक कर इस्लामी उग्रवाद को पनपाने में सहायक सिद्ध होगी। बाबासाहब आंबेडकर ने भी इसे हिन्दू-मुस्लिम दंगा मानने से इनकार करते हुए कहा था कि हिन्दुओं की मौत का कोई आँकड़ा नहीं है, लेकिन उनकी संख्या बहुत बड़ी हो सकती हैं। बहुत सारे इतिहासकार मोपला की घटनाकोएक कृषक विद्रोह नाम देते हैं जो कि अंग्रेजों के खिलाफ था। लेकिन यह बात सत्य है कि इस विद्रोह में हजारों लोगों की मौत हो गयी थी। इसी दौर में गांधी जी ने भी अंग्रेजों के खिलाफ असहयोग आंदोलन का बिगुल फूंका था। कुछ राष्ट्रवादी इतिहासकारों के मुताबिक खिलाफत आंदोलन के समर्थन में हिंदुओं को एकजुट करने के लिए ही

असहयोग आंदोलन चलाया गया था। हालांकि महात्मा गांधी का असहयोग आंदोलन और खिलाफत आंदोलन को एक करने के पीछे हिंदु-मुसलमानों को एकजुट करना मक्सद था।

केरल के खिलाफत आंदोलन में मालाबार इलाके के मोपला मुसलमान शामिल थे। मोपला केरल के मालाबार इलाके में रहने वाले मलयाली मुस्लिम थे। इस समुदाय के ज्यादातर लोग छोटे किसान और व्यापारी थे। उन पर इस्लाम के कट्टर मौलवियों का प्रभाव था, जबकि मालाबार इलाके की जमीनों और बड़े व्यापारों पर उच्च वर्ग के हिंदुओं का कब्जा था। मोपला मुसलमान इनके यहां बटाईदार या काश्तकार के तौर पर काम किया करते थे। मोपलाओं ने कई पुलिस स्टेशनों में आग लगा दी थी। सरकारी खजाने लूट लिए गए थे। अंग्रेजों को अपने निशाने पर लेने के बाद इन लोगों ने इलाके के अमीर हिंदुओं पर हमले शुरू कर दिए। इस भयावह मारकाट में हजारों मोपला भी मारे गए। कहा जाता है कि मोपला विद्रोह के दौरान वहां रहने वाले हजारों अल्पसंख्यक हिंदू परिवार प्रभावित हुए, महिलाओं का अपमान हुआ, मजबूरन अनेक हिंदुओं को धर्म परिवर्तन भी करना पड़ा। बाद में आर्य समाज की तरफ से उनका शुद्धीकरण आंदोलन चला। इस प्रकार जिन हिंदुओं ने मुस्लिम धर्म अपना लिया था, उन्हें वापस हिंदू बनाया गया।

इसी आंदोलन के दौरान आर्य समाज के नेता स्वामी श्रद्धानंद जी को उनके आश्रम में ही 23 दिसंबर 1926 को गोली मार दी गई थी। तब तक मोपलाओं का विद्रोह भटक चुका था। आंदोलन ने सांप्रदायिक रंग ले लिया था और इसी वजह से वह बाद में असफल भी हुआ। मोपलाओं के विद्रोह को लेकर आज भी केरल में रहनेवाले मुस्लिम समुदाय की तीखी आलोचना होती है। इतिहासकार शिवकुमार गोयल ने अपनी पुस्तक में,मोपाला आंदोलन में कांग्रेस की भूमिका का उल्लेख करते हुए कहा है कि यह देश का दुर्भाग्य रहा है कि कांग्रेस ने इस्लामी कट्टरवादके विरुद्ध एक भी शब्द नहीं कहा। जब आर्य समाज, हिन्दू महासभा और अन्य हिन्दू संगठनों ने शुद्धीकरण अभियान चलाया तो यह नया विवाद का कारण बना। स्वामी श्रधानंद जी शिक्षाविद तथा आर्य प्रचारक के साथ-साथ कांग्रेस के नेता भी थे। वह कांग्रेस कार्यकारिणी के सदस्य भी थे। स्वामी जी और लाला लाजपत राय ने यह महसूस किया कि अगर हिन्दुओं के निर्बाध धर्मान्तरण की छूट मिलती रही तो यह हिंदुस्तान की एकता के लिए बड़ा खतरा सिद्ध होगा । इसीलिए परिस्थिति पर लगाम लगाने के लिए स्वामी श्रद्धानंद, लाला लाजपत राय और महात्मा हंसराज जी ने धर्म परिवर्तन करने वाले हिन्दुओं को पुन: वैदिक धर्म में वापसी करने का अभियान शुरू करते हैं।

अगर इतिहास अपने आप को दोहराता है तोक्या कांग्रेस के उस समय की नीतियां देश के लिए हानीकारक थी? इसके लिए हम इतिहास के पन्नों के कुछ अंश फिर से सामने रख सकते हैं। क्या

बाकई महात्मा गाँधी जी ने खिलाफत आन्दोलन का समर्थन करके हिंदू-मुस्लिम एकता को कमजोर किया था? खिलाफत आंदोलन की शुरुआत में यह आंदोलन अंग्रेजों के खिलाफ था जिसमें हिंदू-मुस्लिम दोनों एकजुट होकर लड़ रहे थे। अंग्रेजों ने इस आंदोलन को दबाने के लिए हर प्रकार का हथकंडा अपनाया। इस आंदोलन के बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। उसके बाद मालाबार इलाके में आंदोलन का नेतृत्व मोपला मुसलमानों के हाथों में चला गया। मोपलाओं के हाथ में जाने के बाद आंदोलन बिगड़ गया। मोपलाओं ने ऊंची जाति के जमींदार हिंदुओं को निशाना बनाना शुरू कर दिया। इसीलिए इस आंदोलन को किसान विद्रोह के रूप में भी देखा जाता है। हो सकता है इस मुहिम में नीची जाति के कुछ हिंदू भी मोपालाओं के साथ शामिल थे। क्योंकि वहां के निम्न जाति के हिंदू तब उच्च जाति के लोगों से काफी परेशान थे। इस प्रकार यह जमींदारों के खिलाफ बटाईदारों का विद्रोह बन जाता है। मोपला मुसलमान कम मजदूरी, काम करने के तौर तरीकों और दूसरे भेदभावों की वजह से हिंदू जाति के जमींदारों से नाराज थे। केरल में जमींदारों के खिलाफ इस तरह के विद्रोह पहले भी होते रहे हैं। 1836 और 1854 में भी इस तरह के विद्रोह हुए थे। 1841 और 1849 का विद्रोह भी काफी बड़ा था, लेकिन 1921 में हुआ मोपलाओं के विद्रोह ने काफी हिंसक शक्ल अख्तियार कर लिया था।

यह वही इलाका थाजहाँ हैदर अली और उनके बेटे टीपू सुल्तान ने पहले हमले किए थे। पुर्तगाली भी पहले से ही यहाँ जमे हुए थे। ऊपर से मैसूर के आक्रमण ने यहाँ के स्थानीय लोगों को पलायन के लिए मजबूर कर दिया था। लोगों केघरवार में जम कर लूटपाट किया गया था। लोगों को इस बात से हैरानी थी कि यहाँ 'मप्पिला मुस्लिमों' की जनसंख्या कैसे अचानक इतनी बढ़ गई कि वो हावी हो गए। इसके दो ही कारण बताए जाते हैं –जनसंख्या वृद्ध दर और निम्न जाति के प्रताड़ित हिन्दुओं की बड़ी संख्या में धर्मांतरण। 1921 में दक्षिण मालाबार के कई जिलों में मुस्लिमों की जनसंख्या सबसे ज्यादा थीं। कुल जनसंख्या का वो 60 प्रतिशत थे। अब वो समय आया जब महात्मा गाँधी जी ने वहां के बहुसंख्यकों का विश्वास जीतनेके लिए खिलाफत आंदोलनमें कांग्रेस कोशामिलकरलिया। यह आंदोलन ऑटोमन साम्राज्य को पुनः बहाल करने के लिए हो रहा था। तुर्की के खलीफा को पूरी दुनिया में इस्लाम का नेता नियुक्त करने के लिए हो रहा था।न भारत को तब तुर्की से कोई लेनादेना था और न ही ऑटोमन साम्राज्य से। लेकिनगाँधी जी ने समाज के हर कोने से लोगों को कांग्रेसमें जोड़ने के लिए उनके एक ऐसे अभियान का समर्थन कर दिया, जिसके दुष्परिणाम आजभीलोगों कोभुगतना पड़ रहा है। 18अगस्त, 1920को महात्मा गाँधी खिलाफतके नेता शौकत अली के साथ मालाबार आए थे। उनका आगमन असहयोग आंदोलन और खिलाफतके लिए लोगों को जागरूककरने के लिए था।

स्वामी श्रद्धानंद जी ने गांधी जी से प्रश्न कियाथा, हिन्दुओं के धरमांतरण का जो अभियान चल रहा है क्या कांग्रेस उसे बंद कराने का प्रयास करेगी? बावजूद इसके कांग्रेस उनके शुद्धिअभियान का विरोध करती रही।ऐसा आरोप लगाया जाता है कि गांधीजी और उनकी नेतृत्वाधीन कांग्रेस ने तबलीग अभियानके विरुद्ध कुछ नहीं कहा।ऐसा उल्लेख मिलता है कि गाँधी जी ने स्वयं 'हरिजन' तथा अन्य पत्रों में लेख लिखकर स्वामी श्रद्धानंद जी तथा आर्यसमाज के शुद्धि आन्दोलनकाविरोध किया।दूसरी ओर जगह-जगह हिन्दुओं के धर्मांतरण के प्रसंगमें भी उन्होंने कुछ कहा होगा ऐसा प्रमाण अभी मिलना बाकी है। इन्हीं सब कारणों से स्वामी श्रद्धानंद जी ने कांग्रेस से सम्बन्ध तोड़ लिया। तब कांग्रेस के कुछ नेताओं को इनके द्वारा चलाये जा रहे शुद्धि आन्दोलन के विरोध करनेकाऔर अधिक मौका मिला। तर्क यह दिया गया कि शुद्धीकरण आन्दोलन हिन्दू-मुस्लिम एकता को कमजोर कर रहा है । तब कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व के निर्देश से स्वामी जी को यह आदेश दिया गया कि वे इस अभियान में भाग न लें । लेकिन स्वामी श्रद्धानंद जी शुद्धि अभियान में पुरे जोर शोर से और अधिक सक्रिय हो गए। ऐसा कहा जाता है कि इस दौरान उन्होंने 60 मलकाने मुसलमानों को वैदिक (हिन्दू) धर्म में दीक्षित भी किया था। तब मुसलमानों में भी शुद्धि अभियान के खिलाफविरोधका लहरदौड़गया।पहले तो श्रद्धानंद जी को धमकियां दी गयीं, तब भी जब वे नहीं रुके तो अंत में 22 दिसम्बर 1926 को दिल्ली में अब्दुल रशीद नामक एक मजहबी उन्मादी ने उनकी गोली मारकर हत्या कर दी।

मोपला का इतिहास लिखने वालों ने जब भी इस आंदोलन के बारे में लिखा तो इसे एक विद्रोह या हिन्दू-मुस्लिम दंगा ही कहा है। 19 वीं सदी में, महाराष्ट्र में भी इस प्रकार के हिन्दू-मुस्लिम विवाद का उदाहरण मिलता है। उत्तर भारत की अपनी अलग समस्या थी, तो वहां के किसी का ध्यान केरल के मालाबार की घटनाओं की ओर शायद ही आकर्षित हुआ होगा। लगभग 6 महीनों तक मालाबार में आंदोलन चलता है, जिसमें दस हजार से भी अधिक जानें गईं थी।

स्वातंत्रवीर सावरकर जी ने उन्हीं दिनों 20 जनवरी 1927 के 'श्रद्धानंद' के अंक में, अपने लेख में गाँधी जी द्वारा आरोपी अब्दुल रशीद के बचाव पर सवाल उठाते हुए लिखा था-गाँधी जी ने अपने को सुधा हर्दय , 'महात्मा' तथा निस्पक्ष सिद्ध करने के लिए एक मजहवी उन्मादी हत्यारे के प्रति सुहानुभूति व्यक्त की है ।मालाबार के मोपला हत्यारों के प्रति वे पहले ही ऐसी सुहानुभूति दिखा चुके हैं ।स्वामी श्रद्धानंद जी की इस नृशंस हत्या ने सारे देश को व्यथित कर डाला परन्तु गाँधी जी ने यौंग इंडिया में लिखा, "मैं अब्दुल रशीद नामक मुसलमान, जिसने श्रद्धानंद जी की हत्या की है , का पक्ष लेकर कहना चाहता हूँ कि इस हत्या का दोष हमारा है । अब्दुल रशीद जिस धर्मोन्माद से पीड़ित था, उसका उत्तरदायित्व हम लोगों पर है ।देशाग्नी भड़काने के लिए

केवल मुसलमान ही नहीं, हिन्दू भी दोषी हैं। "सावरकर जी का यह भी मानना है कि अंग्रेजों की नीति सिर्फ तुष्टिकरण की रही थी, बल्कि महात्मा गाँधी जैसे नेता तक ने 'खिलाफत आंदोलन' का समर्थन करके हिन्दुओं के नुकसान की तरफ से आँख मूँद लिया था।

महात्मा गाँधी भी इस भुलावे में जीते रहे कि समाज के सभी तबके ने 'असहयोग आंदोलन' का समर्थन कर दिया है। लेकिन, इससे ये ज़रूर हुआ कि 'खिलाफत' की आग में मोपला मुस्लिमों ने हिन्दुओं का बहिष्कार शुरू कर दिया। इस प्रकार वहां हिन्दू-मुस्लिम संकट और अधिक गहरा गया। उन्होंने एक-दूसरे के घर-सम्पत्तियों वा खेतों को तबाह कर दिया गया। तभी कईयों का जबरन धर्मांतरण भी किया गया होगा। कांग्रेस पार्टी ने अंग्रेजों पर दोष मढ़ कर इतिश्री कर ली। वहां की आम जनता को बचाने कोई आगे नहीं आया। बाद में गांधी जी वहां गए और कालीकट में 20,000 की भीड़ के सामने उन्होंने कहा कि अगर खिलाफत के मामले में न्याय के लिए भारत के मुस्लिम असहयोग आंदोलन का समर्थन करेंगे तो हिन्दुओं का भी फर्ज बनता है कि वो अपने मुस्लिम भाइयों के साथ सहयोग करें। तभी जून 1920 में महात्मा गाँधी के कहने पर ही मालाबार में खिलाफत कमिटी बनी। इसके बाद वहां काफी सक्रियता से काम आरंभ होता है। इस घटना सेवामपंथी नेता बहुत खुश थे। सौम्येन्द्रनाथ टैगोर जैसे कम्युनिस्ट नेताओं ने मोपला को जमींदारों के खिलाफ विद्रोह बताया। लेकिन इतिहासकार स्टेफेन फ्रेडरिक डेल ने स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि यह एक प्रकार का हत्याकांडथा। इसके लिए वह सीधे-सीधे मुस्लिम कट्टर पंथियों को जिम्मेदार ठहराते हैं। उनका कहना था कि आर्थिक परिस्थिति से इस आंदोलन का कोई लेनादेना नहीं था। देश में कई किसान आंदोलन हुए लेकिन किसी का भी स्वरूप मोपला जैसा नहीं है। शायद डॉक्टर आंबेडकर यह कहते हैं, "अंग्रेजों के खिलाफत को तो जायज ठहराया जा सकता है, लेकिन मोपला बहुसंख्यकों ने मालाबार के अल्पसंख्यकों के साथ जो किया वो विस्मित कर देने वाला है। मोपला के हाथों मालाबार के अल्पसंख्यकों का बहुत नुकसान हुआ। हमला, धर्मांतरण का प्रस्ताव, धर्मस्थलों का नुकसान करना, महिलाओं का अपमान आदि खुलेआम किए गए। अल्पसंख्यकों के साथ सारी क्रूर और असंयमित बर्बरता हुई। मोपला ने कमजोरों के साथ ये सब खुलेआम किया, जब तक वहाँ सेना न पहुँच गई।"

मोपला आंदोलन के बारे में वामपंथी इतिहासकार कहते हैं कि वह अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह था। अगर ऐसा था, तो फिर धर्मस्थलों को क्यों नुकसान पहुँचाया गया? वह कैसा स्वतंत्रता संग्राम था जिसमें अपने के ही देशवासियों को अपनी धरती छोड़ कर भागना पड़ा था,आंदोलनकारियों के डर से। वामपंथी इसे 'मप्पिला मुस्लिमों का सशस्त्र विद्रोह' कहते हैं। आरोप है कि अगर ये विद्रोह था तो इसमें सिर्फ मुस्लिम ही शामिल क्यों थे? बाकी धर्मों के लोग

इसमें क्यों नहीं शामिल थे? जनश्रुति के अनुसार इसमें सबसे विवादित नाम आता है वरियामकुननाथ हाजी का जो इस पूरे आंदोलन का सबसे विवादित व्यक्ति थे। कहते हैं वो मालाबार में 'मलयाला राज्यम' नाम से एक इस्लामी सामानांतर सरकार चला रहा था। इसीलिए कुछ लोग आज यह तर्क दे रहे हैं कि एक प्रकार से इस्लामिक स्टेट की स्थापना के प्रयास करने वाला कोई व्यक्ति स्वतंत्रता सेनानी कैसे हो सकता है? जिसने द हिन्दू अख़बार को पत्र लिख कर हिन्दुओं को भला-बुरा कहा था। हालांकि बाद में अंग्रेजों ने उसे मौत की सज़ा सुनाई थी। आजकल कोई-कोई यह भी कह रहे हैं कि कुंजाहमद के ऊपर एक फिल्म बनाने की तैयारी की जा रही है।